संयुक्त राष्ट्र के 'शान्ति स्थापना अभियानों' की भूमिका : उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों के विशेष सन्दर्भ में (वर्ष 2007 से 2017)

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा,
की पीएच. डी. (राजनीति विज्ञान) की उपाधि हेतु लघु शोध पत्र

2017–2018

शोधार्थिनीः

शिवानी सेठ

पीएच. डी.
(राजनीति विज्ञान)

पर्यवेक्षिका
प्रो0 पूर्णिमा जैन
समाजशास्त्र एवं राजनीति
विज्ञान विभाग

सहपर्यवेक्षिका
डॉ0 अंजू शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र एवं राजनीति
विज्ञान विभाग

संकाय प्रमुख
प्रो0 एस. पी. श्रीवास्तव
समाज विज्ञान संकाय

विभागाध्यक्ष
प्रो0 पूर्णिमा जैन
समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग

दयालबाग़ ऐजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा – 282005

संयुक्त राष्ट्र के 'शान्ति स्थापना अभियानों' की भूमिका : उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों के विशेष सन्दर्भ में (वर्ष 2007 से 2017)

प्रस्तावना

शान्ति किसी भी राष्ट्र तथा सम्पूर्ण विश्व की उन्नति, खुशहाली एवं अन्य देशों के साथ राष्ट्र के सौहार्दपूर्ण संबंधों के लिए एक मूलभूत आवश्यकता है, परंतु विश्व में हमें अनेक प्रकार के संघर्ष और युद्ध देखने को मिलते रहे हैं , जैसे– रुस–जापान युद्ध (1904–1905), 1910 का अलबानियन रिवोल्ट (1910), बल्कान युद्ध (1912–1913), प्रथम विश्व युद्ध (1914– 1918), रुस में गृह युद्ध (1918–1920), यूक्रेन में स्वतंत्रता हेतु युद्ध (1917–1921), जर्मनी की क्रान्ति (1918–1919), इटालो–यूगोस्लाव युद्ध (1919–1920), द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945), आदि, जिनसे विश्व की शांति एवं सुरक्षा में बाधा उत्पन्न होती रहती हैं। इसीलिए अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति की स्थापना के लिए समय–समय पर अनेक अर्न्तराष्ट्रीय संगठनों की स्थापना की गयी है, उदाहरण के लिए प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् 'लीग ऑफ नेशनस्' की (सन् 1920 में) स्थापना की गई। 'लीग ऑफ नेशनस्' के असफल हो जाने के कारण दूसरा विश्व युद्ध हुआ। इसके पश्चात् 24 अक्टूबर 1945 को 'संयुक्त राष्ट्र संघ' अस्तित्व में आया जिसके निम्न प्रमुख उददे्श्य थे :

1. अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा को बनाए रखना,
2. नई उभर रही लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं के आपसी विवादों को सुलझाना,
3. झगड़ों में लिप्त देशों की सहमति से संघर्षयुक्त स्थानों पर शान्ति सेना की तैनाती कर वहां शान्ति स्थापना हेतु संघर्ष विराम करवाना,
4. संघर्षों को सुलझाना और संघर्षों में लिप्त पक्षों के मध्य समझौते हेतु परस्पर सहमति के वातावरण का निर्माण करना।

संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुच्छेद–1 के अनुसार संयुक्त राष्ट्र का प्रथम उत्तरदायित्व–''अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की स्थापना करना, और इस उददे्श्य की प्राप्ति हेतु शान्ति को मिलने वाली चुनौतियों को प्रभावशाली तरीकों से समाप्त करना तथा आक्रमणों एवं अन्य शान्ति भंग करने की कोशिशों का दमन करना

है।''[1] शान्ति स्थापना अभियान वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित करने के मुख्य साधन हैं। संयुक्त राष्ट्र के 'शान्ति स्थापना अभियान' ऐसे अभियान हैं जिनमें सैन्य बल तो शामिल होते हैं, परन्तु वह अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षपूर्ण क्षेत्र में शांति और सुरक्षा को स्थापित करने के लिए बल का उपयोग नहीं करते।

संयुक्त राष्ट्र के 'शान्ति स्थापना अभियानों' के प्रारम्भिक मुख्य कार्य निम्न प्रकार थे :

1. संघर्ष युक्त क्षेत्रों में शान्ति प्रक्रिया की निगरानी तथा समीक्षा करना,
2. युद्ध में शामिल दो समूहों को अलग करना, तथा युद्ध विराम अनुबन्ध का निरीक्षण करना, तथा
3. संघर्ष विराम के उल्लंघन के प्रयासों को रोकना था।

वर्तमान समय में बहुआयामी 'शान्ति स्थापना अभियानों' के कार्य न केवल शान्ति और सुरक्षा स्थापित करना हैं, बल्कि ;

1. संबधित देश की राजनीतिक प्रक्रिया को सुचारू करना,
2. निशस्त्रीकरण में मदद करना एवं हथियारों की आवाजाही को रोकना,
3. प्रतिद्वन्दियों में परस्पर समझौता करवाना,
4. चुनाव प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालन करना,
5. मानवाधिकारों की रक्षा करना, उन्हें लागू करना और उन्हे बढ़ावा देना,
6. प्रभावित क्षेत्र में कानून के शासन की पुर्नस्थापना करना, तथा
7. संघर्ष युक्त क्षेत्रों में नागरिकों, बच्चों, औरतों की रक्षा करना हैं ।

जब हम संयुक्त राष्ट्र के 'शान्ति स्थापना अभियानों' के शुरूआती दौर को देखते है तो इनका आरम्भ 1948 में हुआ जब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् ने मध्य पूर्व में संयुक्त राष्ट्र सैन्य पर्यवेक्षकों की तैनाती को अधिकृत किया इस अभियान का उददेश्य इजराइल और इसके अरब पड़ोसी देशों के बीच 'आर्मीस्टाइस समझौते' का

[1] http://www.un.org/en/index.html

निरीक्षण करना था। इस अभियान को बाद में 'यू0 एन0 ट्रूस सुपर–विजन ऑर्गेनाइजेशन' (UNTSO) के नाम से जाना गया। ''शान्ति स्थापना'' (पीस कीपिंग) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र के सैक्रेटरी जनरल डैग हैमरसक्जोल्ड (1953-1961) द्वारा पहली यू0 एन0 एमरजेन्स फोर्स (UNEF–I) के लिए किया गया था। जिसमें हल्के हथियारों से युक्त 5000 पर्यवेक्षक थे, जिन्हें 1956 में सनाई भेजा गया था जहां इजिप्ट और इजराईल ने परस्पर युद्ध को समाप्त करने का समझौता किया था।

संयुक्त राष्ट्र के किसी भी 'शान्ति स्थापना अभियान' की तैनाती का निर्णय सुरक्षा परिषद् एक निश्चित एवं निर्धारित प्रक्रिया के अन्तर्गत करती है। जिसमें शुरूआती सलाह, क्षेत्रीय मूल्यांकन, सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव, वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति, योजना एवं तैनाती आदि चरण शामिल हैं। इसके पश्चात् सेक्रेटरी जनरल अभियान की समाप्ति तक सुरक्षा परिषद् को लगातार अभियान की जानकारी देता रहता हैं। संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों की तैनाती पिछले लगभग सात दशकों से विश्व के विभिन्न देशों जैसें – कांगो, लीबिया, सुडान, दक्षिण सुडान , कोर्टे डी आइवोर, सिरा लियोनी, इजराइल, हैती, अफगानिस्तान और पाकिस्तान, कम्बोडिया, इस्ट टीमोर, आदि में विभिन्न परिस्थितियों में की जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों के सिद्धान्त :

संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियान मुख्यतः तीन सिद्धान्तों द्वारा संचालित होते हैं :

1. **पक्षों की सहमति** : संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियान केवल संघर्ष में लिप्त पक्षों की सहमति से ही चलाए जा सकते हैं।
2. **निष्पक्षता** : संयुक्त राष्ट्र शान्ति रक्षक न केवल पार्टियों के परस्पर झगड़े में तटस्थ रहते हैं, बल्कि अपने आदेशों के क्रियान्वन में भी वे एकदम निष्पक्ष होते हैं।
3. **आत्म–रक्षा अथवा आदेशों के क्रियान्वन के अतिरिक्त बल प्रयोग का निषेध** : संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियान बलपूर्वक लागू करने के साधन नहीं हैं लेकिन वह कार्यनीतिक स्तर पर संयुक्त राष्ट्र से अधिकार प्राप्त होने पर आत्मरक्षा आथवा आदेशों के क्रियान्वन हेतु बल प्रयोग कर सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के 'शान्ति स्थापना अभियान' ''संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियान विभाग'' (DPKO) के द्वारा संचालित किये जाते हैं। शान्ति स्थापना अभियान विभाग की स्थापना 1992 में तब हुई जब बुतरस–बुतरस घाली ने संयुक्त राष्ट्र के सेक्रेटरी जनरल का पदभार सम्भाला। शान्ति स्थापना अभियानों को 1992 तक संयुक्त राष्ट्र के विशेष 'राजनीतिक अफेयर्स' नामक विभाग द्वारा चलाया जाता था। संयुक्त राष्ट्र का ''शान्ति स्थापना अभियान'' नामक विभाग सदस्य राज्यों तथा सेक्रेटरी जनरल को दुनिया भर में शान्ति और सुरक्षा स्थापित करने के प्रयासों में सहायता करता हैं। शान्ति स्थापना अभियान विभाग का प्रमुख अन्डर सेक्रेटरी जनरल होता है। शान्ति स्थापना अभियान विभाग, संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियान और सुरक्षा परिषद के मध्य संवाद का कार्य करता है तथा शान्ति स्थापना अभियान को राजनीतिक तथा कार्यकारी दिशा निर्देश प्रदान करता है।

यद्यपि सुरक्षा परिषद् 'शान्ति स्थापना अभियान' की स्थापना, रख–रखाव, इत्यादि के कार्य करती है, तथापि संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुच्छेद 17 के अनुसार इन अभियानों के रख–रखाव के लिए वित्त की व्यवस्था हेतु संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य देश अंशदान करते हैं। संयुक्त राष्ट्र का स्वयं का कोई सैन्य बल नहीं है। इसके सदस्य देश ऐच्छिक आधार पर हर शान्ति स्थापना अभियान के लिए वांछित सैन्य बल तथा अन्य अधिकारियों की पूर्ति में सहयोग करते हैं।

शांति एवं सुरक्षा की स्थापना के अपने प्रारम्भिक एवं मूलभूत उददे्श्य की पूर्ति हेतु संयुक्त राष्ट्र द्वारा सन् 1948 से लेकर सन् 2017 तक 71 शांति स्थापना अभियानों की तैनाती की गई है जिसमे से 56 शांति स्थापना अभियान मिश्रित परिणामों के साथ समाप्त हो चुके हैं तथा 15 शांति स्थापना अभियान वर्तमान में विश्व के 05 विभिन्न महाद्वीपों में तैनात हैं, जिसमें विश्व के विभिन्न देशों से आए शांति रक्षकों द्वारा योगदान दिया जा रहा हैं। उल्लेखनीय हैं कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा अब तक (2017) जो भी शांति स्थापना अभियान तैनात और संचालित किये गए हैं, उनमें से सर्वाधिक 23 (41 प्रतिशत) 'शांति स्थापना अभियान' अफ्रीकी महाद्वीप में संचालित किए गए हैं तथा 2017 में 15 में से 08 अभियान केवल अफ्रीकी महाद्वीप में ही संचालित हैं तथा इन 08 में से भी 05 शांति स्थापना अभियान अफ्रीका के केवल उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी

देशों में संचालित हैं। 'वर्तमान सन् (2017) में विश्व के 05 महाद्वीपों में जो संयुक्त राष्ट्र के 15 'शांति स्थापना अभियान' चल रहे हैं, उसमें 1,06,706 शांति रक्षक तैनात हैं, जिसमें से 91,059 अर्थात 85 प्रतिशत शांति रक्षक अफ्रीका में तैनात हैं तथा इनमें से भी 74,058 शांति रक्षक अर्थात 81 प्रतिशत शांति रक्षक केवल उत्तर एवं मध्य अफ्रीका के देशों अर्थात सूडान, दक्षिण सूडान, कांगो लोकतान्त्रिक गणराज्य, तथा मध्य अफ्रीकन गणराज्य में तैनात हैं, जो कि विश्व में तैनात कुल शांति रक्षकों का 70 प्रतिशत हैं।'[2]

उपरोक्त क्षेत्रों को निम्नलिखित मानचित्रों द्वारा दशार्या गया हैं –

अफ्रीकी महाद्वीप का मानचित्र जहां 'शान्ति स्थापना अभियान' संचालित हैं

उत्तर एवं मध्य अफ्रीका के देशों का मानचित्र जहां 'शान्ति स्थापना अभियान' संचालित हैं

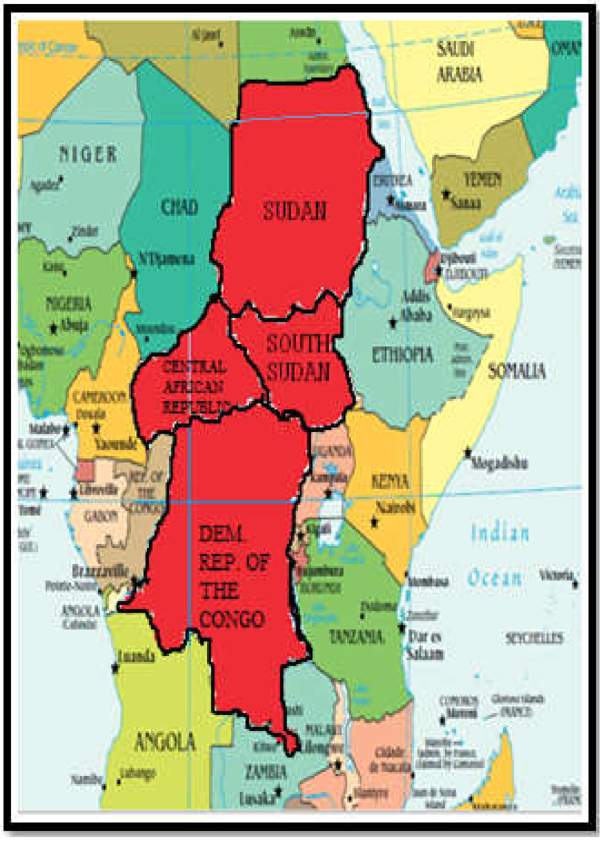

(स्त्रोत: http://ontheworldmap.com/africa/)

---

[2] https://peacekeeping.un.org/en/troop-and-police-contributors

मध्य एवं उत्तरी अफ्रीकी देश अफ्रीकन महाद्वीप के क्षेत्रफल, खनिज पदार्थ, तथा जनसंख्या की दृष्टि से महत्वपूर्ण देश हैं। अफ्रीकन महाद्वीप एशिया के बाद विश्व के सात महाद्वीपों में सबसे बड़ा महाद्वीप है। प्राकृतिक संसाधनो से परिपूर्ण होते हुए भी अफ्रीका विश्व का सबसे अविकसित भू–भाग है। यातायात एवं तकनीक का समुचित विकास ना होने के कारण अफ्रीका के अधिकांश भागों में इन संसाधनो का समुचित उपयोग नहीं हो पाया हैं।

अफ्रीकन महाद्वीप के विभिन्न भागों में समय–समय पर अनेक प्रकार के संघर्ष, युद्ध, क्रांतियां तथा गृहयुद्ध देखने को मिलते रहे हैं, परन्तु वर्तमान में अफ्रीकन महाद्वीप का मध्य एवं उत्तरी भाग अफ्रीका के सबसे ज्यादा संघर्षरत एवं युद्धरत भागों में से एक हैं। उत्तरी भाग में अलजीरिया, मिस्त्र, लीबिया, मोरक्को, सूडान, दक्षिण सूडान (जिसकी उत्त्पति सन् 2011 में सूडान का विभाजन होने से विश्व के 193 वें देश के रूप में हुई), टयूनीशिया, एवं पश्चिमी सहारा नामक देश आते हैं तथा अफ्रीका के मध्य भाग में अंगोला, कैमेरून, मध्य अफ्रीकन गणराज्य, चाड, कांगो, कांगो लोकतान्त्रिक गणराज्य, इक्वेटोरियल गिनी, गैबोल, साओ होमे एवं पिंसिपे, नामक देश आते हैं। वर्तमान में हमें सूडान के डाफूर क्षेत्र में युद्ध एवं अभेयी संघर्ष, दक्षिण सूडान में जातीय संघर्ष एवं गृह युद्ध, कांगो लोकतान्त्रिक गणराज्य में कीवू संघर्ष तथा मध्य अफ्रीकन गणराज्य में आन्तरिक संघर्ष के कारण इन क्षेत्रों में सर्वाधिक अस्थिरता देखने को मिलती हैं, जिनके कारण वहां की जनता को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

अफ्रीकन महाद्वीप के उपरोक्त देशों में शांति एवं स्थिरता की स्थापना तथा वहां के लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र ने इन क्षेत्रों में अपने 'शांति स्थापना अभियानों' की स्थापना की है तथा इन अभियानों के अर्न्तगत वहां पर शांति रक्षकों की तैनाती की गई है जो कि इन संघर्षरत क्षेत्रो में शांति एवं सुरक्षा की स्थापना करने, मानवाधिकारों को लागू करने तथा उनकी रक्षा करने, राजनीतिक संस्थाओं को स्थापित करने आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के यह शांति स्थापना अभियान वहां के क्षेत्रीय संगठनों का भी सहयोग लेते हैं। जैसे कि संयुक्त राष्ट्र नें अफ्रीकन महाद्वीप के प्रमुख क्षेत्रीय संगठन अफ्रीकन यूनियन के साथ मिलकर सूडान में संघर्ष एवं युद्धों को समाप्त करने हेतु वहां पर सन् 2007 में

United Nations/ African Union Mission in Darfur (UNAMID) नामक 'शांति स्थापना अभियान' प्रारम्भ किया है।

उल्लेखनीय हैं कि उत्तर एवं मध्य अफ्रीकन देशों में संयुक्त राष्ट्र द्वारा चलाए जा रहे 'शांति स्थापना अभियानों' में संयुक्त राष्ट्र के सहभागी – सहयोगी देश (बंग्लादेश, इथोपिया, भारत, रवांडा, मिस्त्र, पाकिस्तान, जाम्बिया, कैमरून, मोरोक्को, नेपाल, चीन, तंजानिया, आदि) भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यहां तैनात किए जाने वाले शांति रक्षकों को सम्बन्धित क्षेत्रों में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है।

सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

शांति को मानव जाति एवं सम्पूर्ण विश्व के विकास के लिए एक पूर्व शर्त माना जाता हैं। शांति वह स्थिति है जब लोगों के मध्य परस्पर तालमेल हो तथा वह अपने झगड़ों का निवारण बिना हिंसा के आपसी वार्ता द्वारा करने में सक्षम हो और अपने जीवन स्तर को सुधारने के लिए संयुक्त रूप से कार्य करें। 'Peace' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Pax' से हुई है, जिसका अर्थ 'सन्धि', 'एक नियन्त्रण' या 'युद्ध अथवा किसी विवाद को समाप्त करने का समझौता' हैं। मार्टिन लूथर किंग जूनियर (1964) के अनुसार – ''वास्तविक शांति केवल तनाव एवं युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है, यह न्याय की उपस्थिति है।'' अतः शांति वह स्थिति हैं, जब दो या दो से अधिक पक्षों अथवा राष्ट्रों के मध्य किसी प्रकार का युद्ध अथवा लड़ाई न हो। शांति के विपरीत संघर्ष एक सामाजिक प्रक्रिया हैं जो सभी समाजों में पाई जाती हैं, इसमें व्यक्ति अथवा समूह किसी उददेश्य की प्राप्ति के लिए दूसरे व्यक्ति अथवा समूहों को रोकने का प्रयत्न करते हैं। ग्रीन (1882) ने संघर्ष को परिभाषित करते हुए कहा हैं कि – ''संघर्ष किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों की इच्छा का जानबूझकर विरोध करने अथवा उसे व्यक्ति से पूर्ण करवाने से सम्बन्धित है।'' समकालीन युद्धों एवं संघर्षो में देशों एवं समूहों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो कि अर्थव्यवस्थाओं एवं पर्यावरण को नष्ट कर रही है तथा मानव जीवन पर भयानक एवं नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। अतः सम्पूर्ण मानव जाति तथा विश्व के सर्वागीण विकास के लिए विश्व में शांति का होना अति आवश्यक है।

शान्ति के सिद्धान्त :– शान्ति के निम्नलिखित तीन प्रमुख सिद्धान्त हैं :

1. **शांति का लोकतान्त्रिक सिद्धान्त** : शांति के लोकतान्त्रिक सिद्धांत की प्रमुख मान्यता हैं कि लोकतान्त्रिक देश आपस में सशस्त्र संघर्ष करने में संकोच करते हैं। युद्ध में लिप्तता के सिद्धांत के विपरीत यह ''शांति का सिद्धान्त'' हैं जिसमें राज्य द्वारा प्रायोजित हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। कुछ सिद्धांतवादी इस सिद्धान्त को ''परस्पर लोकतान्त्रिक शांतिवाद'' या ''अन्तर लोकतान्त्रिक अनाक्रमण उपकल्पना'' भी कहते हैं। इनका मानना हैं कि राज्य में शांति केवल लोकतन्त्र स्थापित करने से नहीं होती, बल्कि यह लोकतन्त्रात्मक मूल्यों को अपनाने एवं दो या दो से अधिक लोकतन्त्रों के मध्य पारस्परिक, निरन्तर और दीर्घकालीन सहयोग से होती है।

2. **जेहान गुलतोंग का शांति सिद्धान्त :** जेहान गुलतोंग के शांति के सिद्धान्त की मुख्य मान्यता ''हिंसा की अनुपस्थिति'' है। इस सिद्धान्त में शांति का अर्थ मात्र हिंसा का विरोधाभासी होना नहीं है, बल्कि यह बताना हैं कि शांति क्या है ? गुलतोंग के सिद्धांत का कहना हैं कि प्रत्यक्ष हिंसा के अतिक्ति ढाचाँगत हिंसा भी होती है, यह प्रत्यक्ष हिंसा तो नहीं होती अपितु व्यवस्था में उपस्थित असमान शक्ति, असमान जीवन जीने का अवसर, क्षमताओं का असमान आकलन, प्रजातीय एवं लैगिंक असमानता, सामाजिक अन्याय, असमानता, इत्यादि सभी ढाँचागत हिंसा के प्रकार हैं।

3. **शांति का लघु सिद्धान्त** : शांति के लघु सिद्धान्त के अनुसार शांति दो या अधिक पक्षों के मध्य 'शांति का सम्बन्ध' हैं। चाहे यह पक्ष व्यक्ति हो, राष्ट्र हो, राज्य हो, एक क्षेत्र या एक सभ्यता हो। शांति किसी एक पक्ष की इच्छा पर आधारित न होकर सभी पक्षों के परस्पर सम्बन्धों का परिणाम होती हैं।

साहित्य की समीक्षा

साहित्य की समीक्षा को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं –

1. संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों का विकास,
2. संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों के प्रभाव,
3. अफ्रीका में संघर्षो के कारण एंव प्रभाव,

4. अफ्रीका में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों का विश्लेषण,

5. अफ्रीकी महाद्वीप में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में विभिन्न देशों की भूमिका,

6. संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में तैनात शांति सैनिकों के समक्ष आने वाली समस्याएं।

1. संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों का विकास –

➢ **Diel, (2008),** ने अपनी पुस्तक **"Peace Operations"** में बताया हैं कि संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों की उत्पत्ति शीत युद्ध के दौरान लीग ऑफ नेशनस् के असफल होने के कारण हुई थी और लेखक ने पारम्परिक एवं नवीन शांति स्थापना अभियानों के मध्य अन्तर बताते हुए कहा है कि जहां पारम्परिक शांति स्थापना अभियान कम संघर्षरत क्षेत्र में तैनात किए जाते थे वहीं नवीन/समकालीन शांति अभियान युद्ध ग्रस्त क्षेत्र में तैनात किए जाते हैं तथा यह आवश्यक बल का उपयोग करते हैं तथा साथ ही प्रारम्भ में जहॉ शांति अभियान को तैनात करने का अधिकार केवल संयुक्त राष्ट्र का होता था, परन्तु अब यह कार्य क्षेत्रीय संगठनों एंव संगठन विशेष द्वारा भी चलाए जाते हैं।

➢ **Mandal, (2009),** ने अपनी पुस्तक **"United Nations & World Peace"** में कहा हैं कि प्रथम विश्व युद्ध के कारण लीग ऑफ नेशन्स की सन् 1919 में स्थापना हुई जो कि लम्बे समय तक नहीं रह सका परन्तु इसने विश्व की विभिन्न सरकारों को यह सुझाव प्रस्तुत किया कि यदि विश्व में से युद्धो को समाप्त कर दिया जाए तो विश्व मानव के रहने के लिए एक सुरक्षित स्थान बन सकता है। इसी कारण सन् 1939 से सन् 1945 के बीच हुए द्वितिय विश्व युद्ध के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ का 24 अक्तूबर 1945 को गठन हुआ, जिसे बाद में संयुक्त राष्ट्र के नाम से जाना गया। संयुक्त राष्ट्र ने अपनी स्थापना के मुख्य उद्देश्य अर्न्तराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखने की पूर्ति हेतु विभिन्न शांति स्थापना अभियान, विश्व के विभिन्न हिस्सों में संचालित किए हैं, जिसकी शुरूआत सन् 1956 में इजिप्ट (मिस्त्र) से हुई।

➢ **Jawli, (2013),** ने अपनी पुस्तक **"Post Cold War World Order"** में शीत युद्ध के पश्चात् उत्पन्न वैश्विक व्यवस्था का वर्णन करते हुए बताया है कि शीत युद्ध के दौरान द्विध्रुविय वैश्विक व्यवस्था के कारण केवल अमेरिका तथा सोवियत संघ द्वारा ही संयुक्त राष्ट्र को तथा उसके द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न शांति

स्थापना अभियानों को प्रभावित किया जाता था परन्तु उत्तर शीत युद्ध काल में बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था होने के कारण संयुक्त राष्ट्र तथा इसके द्वारा संचालित शांति स्थापना अभियानों को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, रूस के साथ ही साथ अनेक नवोदित महाशक्तियों जैसे चीन, फ्रांस ब्रिटेन, जापान तथा भारत आदि द्वारा भी प्रभावित किया जा रहा है। जिसके कारण इसको अपने शांति एवं सुरक्षा की स्थापना के उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु अनेक नई–नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

➢ **Bellamy, & William (2014),** एक पुस्तक में प्रकाशित अपने अध्याय **"Trends in Peace Operations : 1947 - 2017"** में लेखकों ने यह बताया है कि 1947 से 2013 तक हर दशक में संचालित होने वाले शांति स्थापना अभियानों की प्रकृति, आकार, प्रकार, स्थिति, अवधि तथा इनमें शक्तिशाली देशों की भूमिका अलग–अलग रही है। साथ ही यह भी बताया है कि संयुक्त राष्ट्र तथा क्षेत्रिय संगठनों द्वारा चलाए जाने वाले शांति अभियान अलग–अलग होते हैं। संयुक्त राष्ट्र की स्वीकृति वाले शांति अभियानों के अतिरिक्त यह अभियान संघर्षरत देशों में गैर यू. एन. एक्टर अर्थात क्षेत्रिय संगठनों द्वारा संचालित किये जाते हैं। परन्तु ऐसे अभियान जो कि क्षेत्रिय संगठनों द्वारा चलाए जाते हैं उनमे संयुक्त राष्ट्र की न तो स्वीकृति होती हैं और न ही यह उनका किसी प्रकार से प्रबन्ध करता है।

➢ **Sharma, (2014),** ने अपनी पुस्तक **"United Nations and World Peace"** में यह बताया है कि वैश्विक उन्नति के लिए विश्व शांति एक मूलभूत आवश्यकता हैं तथा विश्व शांति के दो आयाम होते हैं – 1. नकारात्मक शांति, जिसका अर्थ केवल युद्धों के अभाव से लगाया जाता हैं तथा 2. सकारात्मक शांति, जिसका अर्थ हैं कि युद्धो के अभाव के साथ ही साथ लोगो को सामाजिक न्याय प्राप्त हो तथा उनका सर्वागींण विकास हो। संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित शांति अभियान केवल नकारात्मक शांति की स्थापना न करके विश्व में सकारात्मक शांति की स्थापना करने का कार्य कर रहे हैं अर्थात इनके द्वारा युद्ध विराम करवाने के साथ ही साथ मानवाधिकारों की रक्षा एवं वृद्धि, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था की पुर्नस्थापना का भी कार्य किया जा रहा है।

➢ **Sloan, (2014),** ने अपने लेख **"The Evolution of the use of Force in UN Peacekeeping"** में बताया हैं कि संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में बल के प्रयोग करने की अनुमति के सम्बन्ध में सन् 1948 के प्रथम मिशन से लेकर अब तक कई बदलाव आए हैं, जहां प्रारम्भ में शांति रक्षकों को केवल आत्म रक्षा करने हेतु बल प्रयोग की अनुमति थी, वहीं 1970 के दशक में यह आदेशों के क्रियानवयन में बल प्रयोग कर सकते थे। 21वीं सदी में ब्राहमी रिर्पोट के द्वारा इन्हें उपरोक्त परिस्थितियों के अतिरिक्त अन्तराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होने की परिस्थितियों में भी बल प्रयोग की अनुमति मिल गई है।

➢ **Choedon, (2016),** ने अपनी पुस्तक "**Politics of the United Nations Peacekeeping Operations"** में इस विषय का अध्ययन किया हैं कि संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों की उत्पत्ति के पीछे का मुख्य कारण शीत युद्ध के समय सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था की असफलता है, जो कि अर्न्तराष्ट्रीय शांति स्थापित करने में असफल हो रही थी क्योकि द्विध्रुविय वैश्विक राजनीति द्वारा इसे अत्यधिक प्रभावित किया जा रहा था। अतः विश्व में शांति एवं सुरक्षा बनाने हेतु सुरक्षा परिषद् द्वारा उस समय शांति स्थापना अभियानों की शुरूआत की गई, जिसमें शामिल शान्ति सैनिको द्वारा शांतिपूर्ण तरीकों का इस्तेमाल करके संघर्षरत क्षेत्रों में शांति स्थापित की गई। परन्तु जैसे–जैसे वैश्विक राजनीति का परिदृश्य बदलता गया वैसे–वैसे इन अभियानों की आवश्यकता, कार्य करने के तरीके तथा इनकी सफलता प्रभावित होती गई क्योंकि उपलब्द्ध संसाधनो की गतिशीलता एवं उचित उपयोग वैश्विक शक्तियों द्वारा प्रभावित होता है।

➢ **Koops & Tardy, (2016),** ने अपनी पुस्तक में प्रकाशित अपने लेख **"The United Nations' Inter – Organizational Relations in Peacekeeping"** में बताया हैं कि शांति स्थापना अभियानों के द्वारा संयुक्त राष्ट्र ''अर्न्तराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा की स्थापना'' करता है लंकिन वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों को संचालित करने वाला एक महत्वपूर्ण संगठन तो है, परन्तु यह केवल एक मात्र संगठन नहीं है वर्तमान में अनेक क्षेत्रियों संगठनों द्वारा भी शांति अभियानों का प्रारम्भ एवं संचालन किया जा रहा है। जिनमें

संयुक्त राष्ट्र की भूमिका कम होती है। इसके साथ ही वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र द्वारा चला जा रहे अभियानों का भी इसमें वर्णण किया गया हैं।

2. संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों के प्रभाव –

➢ **Sambanis, (2008),** ने अपने लेख **"Short-Term and Long-Term Effects of United Nations Peace Operations"** में बताया है कि गृह युद्धों के उपरान्त शान्ति स्थापना अभियानों के दखल के कारण बहुत सकारात्मक परिणाम सामने आये हैं, परन्तु इसके साथ ही लेखक ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या शान्ति रक्षकों के वापस लौट जाने के बाद यह प्रभाव लम्बे समय तक बने रहे हैं तथा शान्ति स्थापना अभियानों के द्वारा छोड़े गए अभाव शान्ति बनाए रखने के अन्य कारकों के साथ तालमेल स्थायी रूप से रख पाने में सफल हुए हैं ? अपने इन प्रश्नों को स्पष्ट करने हेतु लेखक ने अलग–अलग परिस्थितियों में हुए संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियानों का अध्ययन करते हुए शान्ति स्थापना के दीर्घ और अल्पकालीन प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है जिसमें लेखक ने पाया कि संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियानों के अल्पकालीन प्रभाव ही अत्यन्त श्रेष्ठ होते हैं।

➢ **Thakur, et.al, (2014),** ने अपनी पुस्तक **"Unintended Consequences of Peacekeeping Operations"** में बताया है कि शान्ति स्थापना अभियान के नकारात्मक परिणाम भी होते हैं, जैसे कि भ्रष्टाचार तथा अपराधिक गतिविधियों में वृद्धि, उस देश की आर्थिक व्यवस्था का ध्वस्त होना, औरतों और बच्चों के विरूद्ध यौन अपराधों में वृद्धि, इराक में हुआ ''राशन के बदले तेल घोटाला'' तथा डी.आर.सी. में संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियान पर लगे यौन शोषण के आरोप आदि। यह पुस्तक शान्ति स्थापना अभियान के अवांछित नतीजों एवं परिणामों पर प्रकाश डालती है ताकि भविष्य में संचालित होने वाले शान्ति स्थापना अभियानों में तदानुसार आवश्यक निर्देश जारी कर त्रुटियों को प्रभावशाली ढंग से दूर किया जा सके।

➢ **Nizeimana & Nhema, (2015),** ने अपनें लेख **"United Nations (UN) Sanctiones Aggressive Mandate & the Future of UN Peace Keeping Operations: The Case of Democratic Republic**

of Congo (DRC)" में संयुक्त राष्ट्र द्वारा ''परम्परागत शान्ति स्थापना अभियान'' से हटकर ''बल प्रयोग पर आधारित शान्ति स्थापना अभियान'' को अपनाए जाने की आवश्यकताओं एवं सफलताओं का वर्णन किया है और बताया है कि स्युंक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् द्वारा 2013 में अपनाया गया प्रस्ताव संख्या 2098–(यू. एन. रेसोल्यूशन–2098) संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियानों के दौरान बल का प्रयोग करने के लिए संयुक्त राष्ट्र को अधिकृत करता हैं। यह एक ऐसा उग्र अधिदेश देता जिसने संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियान में महत्वपूर्ण बदलाव किये हैं। लेखक ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस प्रावधान को डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कोंगो (डी.आर.सी.) में लागू किये जाने का विश्लेषनात्मक अध्ययन किया है और पाया है कि इस आदेश से डी.आर.सी में शान्ति की पुर्नस्थापना हुई, स्थानीय नागरिकों की संर्घषों से होने वाली मृत्यु में कमी आयी तथा उनके विस्थापन की प्रक्रिया लगभग रूक गई।

3. <u>अफ्रीका में संघर्षों के कारण एंव प्रभाव</u> –

➢ **Bujra, (2002),** ने अपनी पुस्तक **"African Conflicts : Their Causes and Their Political & Social Environment"** में बताया है कि अफ्रीका में फैली अशान्ति को विभिन्न बुद्धिजीवियों ने सिर्फ एक ही श्रेणी ''गृह युद्ध'' के रूप में वर्णित किया है, जिसे अलग–अलग नाम दिये गए हैं, जैसे कि गृह युद्ध, हिंसक संघर्ष, सिविल स्ट्राइक, शत्रुता, युद्ध तथा राजनीतिक अस्थिरता आदि। जबकि अफ्रीका में फैली अशान्ति एवं अस्थिरता को चार आयामों में बॉटा जा सकता हैः

1. सीमा तथा क्षेत्रीय विवाद।
2. गृह युद्ध तथा आन्तरिक संघर्ष तथा उनसे उत्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रियाएं।
3. उपनिवेशवाद मुक्त किये गए इलाकों पर उत्पन्न उत्तराधिकार सम्बन्धित संघर्ष।
4. राजनीतिक और वैचारिक संघर्ष ।

➢ **Aremu & Olaosebikan, (2010),** ने अपने लेख **"Conflict in Africa : Meaning, Causes, Impact & Solutions"** में सूडान (1985-1990), छड्ड (1965-1985), अंगोला (1974 से अब तक), लीबिरीया

(1980-2003), नाईजिरिया (1967-1970), सोमालिया (1989-1993), ब्रून्डी, रवांडा तथा सीएरा लीयोनी (1991-2001) आदि का उदाहरण देते हुए अफ्रीका में फैली अशान्ति के कारणों को बताते हुए उनके दुष्प्रभावों तथा समस्याओं के सम्भावित समाधानों को इंगित किया है तथा बताया है कि अफ्रीकन महाद्वीप की परिस्थितियां आन्तरिक एवं अर्न्तराज्यीय झगड़ों तथा युद्धों के प्रति अति सवेंदनशील है जो इस परोक्ष संकेत को प्रदर्शित करती हैं कि अफ्रीका युद्धों तथा अस्थिरताओं का घर है, जिसका अफ्रीका की सामाजिक और आर्थिक प्रगति पर अत्यन्त नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इन सब कारणों ने इन सब युद्धों और संघर्षों से अफ्रीका को मुक्त कराने के लिए दो उपाय अत्यन्त आवश्यक हैं – 1. अफ्रीका की वर्तमान युद्धों और संघर्षों की परिस्थितियों का गहन विश्लेषनात्मक अध्ययन करके अफ्रीका को इनसे बाहर निकाला जाए तथा, 2. इसे एक विश्वसनीय नेतृत्व प्राप्त हो जो अन्य सुधारों के इलावा इसकी गरीबी का उन्मूलन करे।

➢ **Kieh, (2011),** अपनी पुस्तक में प्रकाशित अन्य अपने लेख **“The Context of Civil Conflicts in Africa”** में लेखक ने अफ्रीका में चल रहे गृह युद्धों एवं संघर्षों के बारे में बताया है तथा उनके कारणों पर प्रकाश डाला है। लेखक ने अपने इस लेख में अफ्रीका में हो रहे गृह युद्धों एवं संघर्षों के निम्नलिखित कारण बताए हैं :– प्रजातीय विभेद, उपनिवेशवाद काल में हुआ भेद भाव, स्वतन्त्रता के पश्चात् एक दलीय सरकार, निजी क्षेत्र के विकास का अभाव, सरकार का अत्यधिक हस्तक्षेप, आर्थिक विकास की अपेक्षा सरकार का सत्ता की तरफ ध्यान का केन्द्रीयकरण। लेखक का कहना है कि उपरोक्त कारणों की वजह से ही अफ्रीका में प्रजातन्त्र के सफल होने में सबसे बड़ी बाधा उत्पन्न हो रही है।

➢ **Kieh, (2011),** अपनी पुस्तक में प्रकाशित अन्य अपने लेख **“Civil Conflicts in Africa : Patterns and Trends”** में लेखक ने अफ्रीका मे हो रहे गृह युद्धों के स्वरुप एवं चलन के बारे में बताया है और कहा है कि वर्तमान में लिबिरिया, ब्रूरूंडी, सिरा लियोन तथा कोंगो में सर्वाधिक संघर्ष देखने को मिलते हैं जिस के कारण वहां पर अनेक सांस्कृतिक और राजनीतिक गुट बनते हैं, इस वजह से वहां संघर्ष और बढ़ते है तथा वहां एक क्षेत्र में हो रहे संघर्षो का प्रभाव अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ता है, जैसे – रवांडा के संघर्ष का कोंगो पर, कोंगो के संघर्ष का युगांडा पर आदि।

➢ **Mwanasali, (2011),** एक पुस्तक में प्रकाशित अपने लेख **"Civil Conflicts & Conflict Management in the Great Lakes region of Africa"** में लेखक ने अफ्रीका में चल रहे गृह युद्धों को उनकी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के परिदृश्य में देखने का तथा रवांडा, ब्रूरूंडी, यूगांडा तथा डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कोंगो में हो रहे संघर्षो के सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है और बताया है कि अफ्रीका में चल रहे संघर्षों एवं गृह युद्धों की उत्पत्ति एवं उनको बढ़ावा देने में आन्तरिक एवं बाहरी शक्तियों दोनो की भूमिका होती हैं, जिसके कारण हमें इन क्षेत्रों में अस्थिरता देखने को मिलती है, जो कि वहां पर चल रहे मानवीय रक्षा के प्रयासों को बाधित करती हैं तथा लोगों के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

➢ **Sambanis & Ibrahim, (2013),** अपने लेख **"Why there are so many Civil wars in Africa? Undersatand & Prevenring Voilent Conflict"** में लेखक ने अफ्रीका में युद्धों और संघर्षो के लिए उत्तरदायी रूढ़ीवादी कारणों से हटकर अलग नवीन समकालीन कारणों का उल्लेख किया है और बताया है कि एक प्रचलित विश्वास के विपरीत अफ्रीका के गृह युद्ध इसकी प्रजातीय और धार्मिक विभिन्नता के कारण नहीं हैं। दुनिया के 161 देशों में 1960 से 1999 के बीच हुए गृह युद्धों के आकलन के लिए उपलब्ध नवीन मानकों के अनुसार अफ्रीका के सन्दर्भ में यह निष्कर्ष निकलता है कि अफ्रीका में युद्धों तथा संघर्षो की अधिकता उच्चस्तरीय गरीबी, असफल राजनीतिक संस्थाओ, तथा प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर आर्थिक व्यवस्था के कारण है तथा इसके समाधान हेतु अफ्रीका में अन्तर समूह सहयोग को बढ़ावा देना जरूरी है।

➢ **Toure, (2015),** अपनी पुस्तक **"Impact of Conflict in Africa"** में लेखक ने अफ्रीका में फैले गृह युद्ध, हिंसा और संघर्ष का शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव तथा इन सबके उन्मूलन हेतु शिक्षा के महत्व पर बल दिया है। लेखक का कहना है कि आजादी के बाद से अफ्रीकन देशों में युद्ध और संघर्ष, वहां की शिक्षा में मुख्य बाधा है, इस समय की हिंसा के बढ़ते हुए स्तर को रोकने और गृह युद्धों के निदान हेतु अफ्रीका में अनुसंधान पर आधारित गहन विश्लेषण युक्त शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है, जिससे वहां शान्ति की स्थापना हो सके क्योंकि जैसे–जैसे लोकतान्त्रिक मूल्यों में वृद्धि होगी वैसे–वैसे हिंसा में कमी आएगी।

➢ **William, (2016),** अपनी पुस्तक **“War and Conflict in Africa”** में लेखक ने बताया है कि समकालीन अफ्रीका में विश्व के अन्य देशों की तुलना में सर्वाधिक संघर्ष एवं युद्ध चल रहे हैं, जिसके कारण वहां कई मिलियन नागरिक अपनी जान गवां चुके हैं तथा अनेकों को बिमारियों, भुखमरी तथा विस्थापन की समस्या का सामना करना पड़ रहा हैं। इन सबके कारण वहां की नई पीढ़ी को मानसिक आघात पहुंच रहा है तथा उनका सर्वांगीण विकास बाधित हो रहा है। वहां की सरकार द्वारा जो धन स्वास्थय, शिक्षा एवं ढांचागत विकास पर व्यय करना चाहिए था, वह इन सशस्त्र संघर्षो एवं युद्धों को समाप्त करने में व्यय हो रहा है।

➢ **Dessu (2017)** ने अपने लेख **“Can South Sudan’s Peace Agreement be Revitalised ?”** में बताया हैं कि उत्तरी सुडान में चल रहा गृह युद्ध जो कि सन् 2013 में प्रारम्भ हुआ था, इसे रोकने का एक मात्र उपाय 17 अगस्त 2015 को हुए ‘एग्रीमेन्ट ऑन दी रेसोलयूशन ऑफ दी कॉनफलिक्ट इन दी रिपब्लिक ऑफ सुडान’ को सही ढंग से लागू करना है जो कि नार्वे–यूनाइटिड किंगडम तथा अमेरिका की निगरानी में किया गया था, परन्तु इस समझौते को लागू करने में सबसे बड़ी समस्या अविश्वास हैं जिसे उत्तरी सुडान में एक अच्छे राजनीतिक नेतृत्व को स्थापित करके समाप्त किया जा सकता है, क्योकि जब तक यह युद्ध चलते रहेगें तब तक उत्तरी सूडान नागरिको कों सरकार एवं विद्रोहियों द्वारा किए जा रहे मानवाधिकारों के हनन, शोषण से झूझना पड़ेगा।

➢ **Donnenfeld & Akum (2017),** ने अपने लेख **“Gathering Strom Clouds : Political & Economic Uncertainty in Central Africa”** में लिखा हैं कि मध्य अफ्रीकन गणराज्य के क्षेत्र में रह रहे स्थानीय लोगों को वहां चल रहे गृह युद्धों, संघर्षों एवं वहां पर अधिक जनसंख्या तथा कम उपलब्ध ससांधनों के कारण सामान अथवा वस्तुओं की बढ़ रही कीमतों का, खराब सेवाओं का, हितों में परस्पर मतभेदों के कारण उत्पन्न संघर्षों का अस्थिर राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं का सामना करना पड़ रहा हैं, जिससे वहां के लोगों का सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विकास बाधित हो रहा है।

➢ **Ngange (2017),** ने अपने लेख **“Preventing Election violence is a Priority for Africa”** में बताया है कि अफ्रीकन महाद्वीप की एक प्रमुख समस्या मतदान के समय होने वाली हिंसा है, जिसके कारण मतदान सही ढंग से न होने की वजह से अफ्रीकी महाद्वीप के देशों में स्थिर राजनीतिक व्यवस्था स्थापित नहीं हो पाती तथा वहां तनाव, संघर्षो एवं गृह युद्धों की उत्पत्ति होती हैं जैसे – डी आर सी, जिम्बावे, दक्षिण सुडान आदि अफ्रीकी देशों में। अतः अफ्रीकी महाद्वीप के देशों में शांति एवं सुरक्षा की स्थापना करने हेतु वहां पर मतदान के समय होने वाली हिंसा को रोकना अति आवश्यक है।

4. <u>अफ्रीका में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों का विश्लेषण</u> –

➢ **Kimaiyo & Tarus, (2006),** अपनी पुस्तक **“Effectiveness of United Nation’s Mission in Africa : a Comparative Assessment of UNAMSIL, MONUC & UNAMID”** में लेखक ने अफ्रीका की समस्याओं के समाधान में संयुक्त राष्ट्र के शान्ति रक्षकों की सफलता एवं असफलता के लिए उत्तरदायी कारकों का अध्ययन किया है। लेखक ने सियरा लियोनी (UNAMSIL), डी.आर.सी. (MONUC) तथा डाफूर (UNAMID) में चलाए गए संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियानों के विस्तृत, तुलनात्मक तथा गहन विश्लेशणात्मक अध्ययन से यह पाया गया है कि ऐसे मुख्य आठ कारक हैं, जो अफ्रीका में संयुक्त राष्ट्र मिशन की प्रभावशाली सफलता में सहायक हो सकते हैं, यह हैं–

1. संयुक्त राष्ट्र के अधिदेश की प्रभावशीलता
2. झगड़े वाली जगह पर पाये जाने वाले खनिज संसाधनो पर नियन्त्रण
3. संयुक्त राष्ट्र शान्ति रक्षकों की क्षमता तथा योग्यता
4. आर्थिक सहायताओं और प्रतिबन्धों की प्रभावशीलता
5. मुख्य पक्षों का प्रभाव तथा उनका क्षेत्रीय संगठनो के साथ तालमेल और मुख्य पक्षों द्वारा शांति समझौतों के प्रति प्रतिबद्धता
6. संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में प्रत्येक मिशन में प्रभावशीलता
7. क्षेत्रिय संगठनो का संयुक्त राष्ट्र शान्ति रक्षक की तैनाती से पूर्व उस क्षेत्र में दखल

8. शान्ति बनाए रखने के लिए क्षेत्रिय कारकों की प्रतिबद्धता।

➢ **Ajayi , (2008),** ने अपनी पुस्तक **"The UN, The AU & ECOWAS – A Triangle for Peace & Security in West Africa"** में बताया हैं कि संयुक्त राष्ट्र और अफ्रीका की स्थानीय संस्थाओं के बीच किस प्रकार आपसी सहयोग से एक संयुक्त ढ़ांचा खड़ा किया जा सकता है जिससे अफ्रीका की समस्याओं के अत्याधिक तथा तीव्र निदान का मार्ग प्रशस्त हो सके। लेखक ने संयुक्त राष्ट्र तथा अफ्रीकन युनियन एवं संयुक्त राष्ट्र तथा इकनॉमिक कम्यूनिटी ऑफ वैस्ट अफ्रीकन स्टेट्स (ECOWAS) के मध्य संबंधो के इतिहास का अध्ययन करके इनके मध्य संबंधो के विकास एवं सहयोग से अफ्रीका में उत्पन्न शान्ति की सम्भावनाओं का वर्णन करने का प्रयास किया है तथा बताया हैं कि इससे संयुक्त राष्ट्र का बोझ हल्का होगा, आपसी सहमति बढ़ेगी तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुदद्ों का लोकतान्त्रिकरण होगा।

➢ **Dorn, (2011),** अपनी पुस्तक **"Keeping Watch : Monitoring Technology & Inovation in UN Peace Operations"** में लेखक जो कि स्वयं एक शांति रक्षक रह चुके हैं, ने सोमालिया, रवांडा, हैती, साइप्रस तथा डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कोंगो में संचालित शांति अभियानों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया है तथा बताया हैं कि शांति स्थापना अभियानों को वर्तमान में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए नई–नई तकनीकों को अपनाना चाहिए, जिससे कि सैनिकों एवं नागरिकों की जान एवं माल को होने वाले खतरों को कम किया जा सके तथा कम लागत में शांति अभियानों को अधिक सफल बनाया जा सके।

➢ **Olonisakin, (2011),** अपनी पुस्तक **"Reinventing Peacekeeping in Africa : Conceptual & Legal Issues"** में लेखिका का कहना हैं कि अफ्रीका में चल रहे शांति स्थापना अभियानों की वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए पुर्नरचना करनी चाहिए ताकि वह वहां की तत्कालीन समस्याओं का समाधान करके वहां के स्थानीय लोगो को मानवीय सहायता एवं सुरक्षा प्रदान कर सकें जिससे वहां के लोगों का भी विकास आरम्भ हो सके।

➢ **Williams, (2013),** अपने लेख **"Peace Operations in Africa: Lessons Learned Since 2000"** में लेखक ने यह कहा है कि 21 वीं सदी के अफ्रीका में हिंसक झगड़े तथा हथियार युक्त लड़ाईयां मुख्य

घटनाएं है जिसके कारण स्थानीय लोगों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, परन्तु चाहे यह मुदद्‌ा सोमालिया में अलशबाब का हो, रवांडा में डेमोक्रेटिक फोर्सस फॉर द लिबरेशन का हो, ईस्टर्न डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कोंगो मे एम–23 विद्रोहियों का हो, डाफूर–सूडान में जंजावीद का हो, उत्तरी माली में अलसार उल–दाइन या अलकायदा का हो, संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों ने हमेशा ही इन ''बिगड़ैल'' समूहों से निपटने में मुख्य भूमिका निभाई है। यह ऑपरेशन अर्न्तराष्ट्रीय संस्थाओ संयुक्त राष्ट्र, अफ्रीकन युनियन, इकनॉमिक युनियन तथा इकनॉमिक कम्यूनिटी ऑफ वैस्ट अफ्रीकन स्टेट्स द्वारा स्वतंत्र तथा संयुक्त रुप से संचालित किए गये हैं।

➢ **Brosig, (2014),** अपने लेख **"African Solution to African Problems or Meddling in your Neighbors' Conflict? Is Peacekeeping Increasing Interstate Tension?"** में लेखक ने यह बताया है कि वर्तमान समय में अफ्रीका में संचालित शान्ति स्थापना अभियानों में अब नये आयाम दिखाई दे रहे हैं, क्योंकि अब अफ्रीका में न केवल संयुक्त राष्ट्र के द्वारा शान्ति स्थापना अभियानों की तैनाती जा रही है बल्कि अफ्रीका के क्षेत्रीय संगठन स्वयं भी शान्ति स्थापना अभियानों की तैनाती कर रहे है तथा इन शान्ति स्थापना अभियानों में सबसे बड़े योगदाता हैं। ये नए आयाम परस्पर अर्न्तराज्यीय तनाव को बढ़ा रहे है तथा संघर्ष के समाधान को और भी विषम बना रहे हैं क्योंकि अफ्रीका के क्षेत्रीय संगठनों का भिन्न–भिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न प्रभाव हैं तथा जहाँ एक स्थान पर इनकी बात मानी जाती है, वहीं दूसरे स्थान पर इनकी बात का विरोध किया जाता है।

➢ **Karlsrud (2015),** ने अपने लेख **"The UN at War: Examining the Consequences of Peace-Enforcement mandates for the UN Peacekeeping operations in the CAR, the DRC, and Mali"** में संयुक्त राष्ट्र के द्वारा ब्राहमी रिपोर्ट का अनुसरन करते हुए उपरोक्त क्षेत्रों में शांति स्थापना एवं हिंसा के खतरे को कम करने हेतु किए जाने वाले बल के प्रयोग के अल्प एवं दीर्घकालीन प्रभावों पर विचार करते हुए बताया है कि बल प्रयोग से भले ही तत्कालीन समय में संघर्षों को रोका जा सकता है, परन्तु

इससे संयुक्त राष्ट्र के शांतिपूर्ण ढ़ग से शांति स्थापित करने के सिद्धान्त का उल्लंघन होता हैं जिसके दीर्घकालीन नकारात्मक प्रभाव होते हैं।

➢ **Adebajo, (2016),** अपनी पुस्तक **"UN Peacekeeping in Africa: From the Suez Crisis to the Sudan conflicts"** में लेखक ने अफ्रीकन महाद्वीप में फैले अशान्ति तथा द्वन्द के कारणों को बताने का प्रयास किया है। लेखक का मानना है कि अफ्रीका में अर्द्ध क्षेत्रीय संगठन जैसे कि इकोनॉमिक कम्यूनिटी ऑफ वेस्ट अफ्रीकन स्टेट, द साउर्थन अफ्रीकन डेवेलपमेन्ट कंट्री, द इंटर गर्वनमेंटल अर्थोरिटी ऑन डेवेलपमेन्ट, इत्यादि के अस्तित्व का मुख्य उददे्श्य परस्पर आर्थिक विश्वयनीयता एवं एकता को बढ़ाना था परन्तु सिएरा लिओनी से अंगोला और वहां से कोंगो में उत्पन्न हुई खनिज संसाधनों की जंग में यह क्षेत्रीय संगठन लिप्त हो गए। लेखक ने इस बात की आवश्यकता पर बल दिया है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए घरेलू, क्षेत्रीय और बाहरी बलों को विचारकों के साथ मिलकर एक विस्तृत विश्लेषनात्मक सहमति बनानी चाहिए। यही कारण हैं कि संयुक्त राष्ट्र और अफ्रीकन यूनियन के बीच परस्पर मजबूत सहयोग के कारण शान्ति और सुरक्षा के ढांचे को मजबूती मिली है और क्षेत्रीय संगठनों के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियान अफ्रीका में काफी हद तक सफल हो रहे है और अब संयुक्त राष्ट्र का ध्यान अफ्रीका में शान्ति स्थापना के पश्चात् इसे बनाए रखने पर केन्द्रित हो रहा है।

5. <u>अफ्रीकी महाद्वीप में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में विभिन्न देशों की भूमिका</u>

➢ **Spantech & Lancer, (2009),** द्वारा प्रकाशित पुस्तक **"The Indian Army in United Nations Peacekeeping Operations"** में यह बताया गया है कि भारत संयुक्त राष्ट्र का एक संस्थापक सदस्य है, जिसने संयुक्त राष्ट्र को अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके पीछे का मुख्य कारण भारत द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शांति को बढ़ावा देने एवं इसे बनाए रखने के प्रति इसकी वचन–बद्धता हैं। इस पुस्तक में आगे यह बताया गया है कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में अपना योगदान देने हेतु संयुक्त राष्ट्र को अपने प्रशिक्षित सैन्य अधिकारी, सैनिक, पुलिस,

अधिकारी, निष्पक्ष निरीक्षक, प्रथम महिला सैनिकों की ट्रूप तथा अन्य स्टाफ कर्मचारी प्रदान किये हैं तथा आर्थिक सहयोग किया है, जिसके कारण भारत की अर्न्तराष्ट्रीय मंच एवं समुदाय में प्रशंसा की जाती है।

- **Waldron (2009),** ने अपनी पुस्तक **"China in Africa"** में बताया हैं कि पिछले कुछ दशकों से चीन अफ्रीकन महाद्वीप में सचालित शान्ति स्थापना अभियानों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इस पर कुछ विचारकों का मानना हैं कि चीन द्वारा ऐसा अर्न्तराष्ट्रीय परिपेक्ष में बदलाव के कारण किया जा रहा है, जिसमें वह 1949 से अफ्रीकी महाद्वीप में उपनिवेशवाद का विरोध करता आया है, परन्तु वास्तव में अपने आर्थिक एवं राजनीतिक हितों को पूरा करने हेतु चीन द्वारा अफ्रीकी महाद्वीप में सहायक एवं उपकारी गतिविधियाँ की जा रही हैं।

- **Firsing, (2014),** ने अपने लेख **"Thinking Through the role if Africa's Militaries in Peacekeeping: The case of Nigeria, Ethiopia and Rawanda"** में बताया हैं कि अफ्रीकी महाद्वीप के नाइजिरिया, इथोपिया एवं रवांडा देश अफ्रीकी महाद्वीप में शांति स्थापित करने हेतु यहां संचालित शांति स्थापना अभियानों में सैन्य एवं संसाधनों के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

- **Yadav, (2014),** ने अपने लेख **"India's Quest for United Nations Security Council Permanent Seat with Special Reference to its Peace Keeping Credentials"** में मुख्यतः यह बताने का प्रयत्न किया है कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों में अपनी आजादी के समय से ही महत्वपूर्ण सैन्य तथा आर्थिक योगदान दिया है। वैश्विक शान्ति हेतु भारत हमेशा से ही प्रयासरत् रहा है। भारत ने अफ्रीकन महाद्वीप में भी संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों के दौरान अनेक अभूतपूर्व योगदान दिये हैं। भारत की संयुक्त राष्ट्र के उदेद्श्य की प्राप्ति के प्रति प्रतिबद्धता केवल कागजी ही नहीं है, बल्कि वास्तविकता के धरातल पर खरी उतरती है। यह सब तथ्य संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थाई सदस्यता के दावे का समर्थन करते हैं।

- **Beri, (2015),** अपने लेख **"India : Providing For Peace in Africa"** में लेखिका ने बताया है कि अफ्रीका में चलाए जा रहे संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियानों में भारत की सहभागिता पक्षों की सहमति,

निष्पक्षता तथा बल प्रयोग का निषेध, सिद्धान्तों पर आधारित है। भारत की संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियानों में सहभागिता अफ्रीकन महाद्वीप के प्रति भारत की एकजुटता को दर्शाती है। भारत ने पूरी प्रतिबद्धता के साथ संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों में भाग लिया है तथा सोमालिया में, जो कि संयुक्त राष्ट्र के सबसे खतरनाक शान्ति स्थापना अभियानों में से एक था, इसमें अनेक भारतीय सैनिकों के बलिदान के बावजूद भारत अन्त समय तक वहां अपना योगदान देता रहा। भारतीय सैनिकों ने संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियान के दौरान अफ्रीका में अनेक कार्य मानवीय दृष्टिकोण से भी किये है, जैसे कि डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कोंगो (MONUC) में भारतीय सैनिकों ने वहां बीमार एवं घायल लोगों को भारतीय कैम्पों में ले जाकर उनका उपचार करवाया, अपने लैगिंक समानता के सिद्धान्त के अनुरूप जनवरी 2007 में लाइबीरिया में सी. आर. पी. एफ. (सैन्टल रिर्जव पुलिस फोर्स) की महिला सैनिकों को तैनात किया, आदि।

➢ **Renwick (2015),** ने अपने लेख **"Peace Operations in Africa"** में अफ्रीका चल रहे शांति स्थापना अभियानों के बारे में बताते हुए कहा हैं कि वर्ष 2015 में सर्वाधिक शांति स्थापना अभियान अफ्रीकन महाद्वीप में संचालित किए गए हैं तथा यह अभियान वहां संयुक्त राष्ट्र, अफ्रीकन यूनियन तथा इकोनॉमिक कम्यूनिटी ऑफ वेस्ट अफ्रीकन स्टेट द्वारा चलाए जा रहे हैं। इन अभियानों में कुछ देश आर्थिक रूप से मदद करते हैं, जबकि कुछ देश ट्रूप अथवा सैन्य बल प्रदान करके मदद करते हैं, जैसे बंगलादेश, भारत, पाकिस्तान, यूगान्डा, ब्रून्डी, इथोपिया एवं केन्या, अफ्रीका में सर्वाधिक ट्रूप सहयोगकर्ता देश हैं, जबकि अमेरिका, जापान, फ्रांस, आदि देश अफ्रीका में चल रहे शांति अभियानों में आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले देश हैं। परन्तु अनेक बार अफ्रीका में संचालित शांति स्थापना अभियनों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता हैं, जिससे उनकी सफलता एवं कार्यकुशलता प्रभावित होती है।

➢ **Shaukat (2015),** ने अपने लेख **"Pakistan Armed Forces' Role in UN Peacekeeping"** में बताया हैं कि सन् 1960 से लेकर वर्तमान तक पाकिस्ततान ने कोंगो, लीबिरिया, सोमालिया, आइवेरी कोस्ट, पश्चिमी सहारा, सिएरा लियोनी, बोसानिया, कोसेवो, हैती आदि देशों में संचालित शांति स्थापना अभियानों में

सैनिक, यातायात, के साधन तथा अन्य सहायक कर्मचारियों के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा यह विश्व के प्रमुख शांति रक्षक दाताओं की सूची में शामिल है।

➢ **Yizhong (2015),** ने एक पुस्तक में प्रकाशित अपने लेख **"China's Participation in United Nations Peacekeeping Operation: Policy & Prospects"** में बताया हैं कि चीन द्वारा संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में जो भाग लिया जाता है। वह चीन की विदेश नीति के ''दूसरे देश के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप'' एवं ''दूसरे देशों में संघर्ष समाप्त करने हेतु अपने सैन्य बल के उपयोग का निषेध'' के सिद्धान्त को ध्यान में रखकर लिया जाता है। इसी कारण से चीन द्वारा शांति अभियानों में सैन्य बल के स्थान पर आर्थिक योगदान अधिक दिया जाता है।

➢ **Djinnit (2016),** ने अपने लेख **"Ethiopia's Contribution to Global & African Peacekeeping Operations"** में बताया हैं कि इथोपिया सन् 1951 से ही काँगों, रवांडा, कोरिया, डाफूर, सूडान, दक्षिण सूडान, लीबिरिया, आइवोरी कोस्ट, आदि देशों में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में योगदान देता आया है तथा पिछले लगभग एक दशक से वर्तमान तक इथोपिया शांति रक्षक प्रदान करने वाले देशों की सूची में प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर रहा है।

6. संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों के समक्ष आने वाली समस्याएं –

➢ **Baneerjee, & Thakur, (2012),** अपनी पुस्तक **"Emerging Challenges in UN Peacekeeping Operations An Indo – Japanese Dialouge"** में यह बताया गया है कि संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियान संयुक्त राष्ट्र को शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान एवं सहयोग प्रदान कर रहे हैं, साथ ही यह भी बताया गया है कि भारत संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानो में एक पुराना एवं महत्वपूर्ण योगदानकर्ता रहा है तथा इसने समय–समय पर संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में अपने सैनिकों की तैनाती की है तथा इस पुस्तक में यह भी बताने का प्रयास किया है कि जापान भले ही सैनिकों के रूप में शांति स्थापना अभियानों में अपना योगदान नहीं देता परन्तु वह इनमें आर्थिक सहायता प्रदान करनें में विश्व में दूसरे स्थान पर है। अतः भारत एवं जापान दोनो का इसमें महत्वपूर्ण योगदान है।

इस पुस्तक में यह भी बताया गया है कि शांति स्थापना अभियान में तैनात शांति रक्षकों को अनेक प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है तथा वह अपना सौ प्रतिशत योगदान नहीं दे पाते जैसे कि आदेशों में स्पष्टता का अभाव आदि, जिसकी वजह से शांति स्थापना अभियानों की सफलता प्रभावित होती है।

- **Guttry, (2014),** अपने लेख **"Recent Challenges to Peacekeeping Operations in Africa"** में लेखक ने बताया है कि अफ्रीका में चल रहे शान्ति स्थापना अभियानों में पिछले कुछ दशकों में बहुत बदलाव आया है। शान्ति स्थापना अभियानों के दौरान शान्ति रक्षक न केवल शांति स्थापित करने का कार्य करते हैं, बल्कि उनके द्वारा स्थानीय नागरिको की रक्षा, राजनीतिक संस्थाओं को दोबारा स्थापित करना आदि बहुआयामी कार्य भी किये जाते है। पूर्व में केवल संयुक्त राष्ट्र द्वारा ही शान्ति स्थापना अभियानों के लिए शान्ति रक्षक प्रदान किये जाते थे, परन्तु वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रिय संगठन, विभिन्न राज्यों के समूह तथा केवल एक राज्य भी शान्ति रक्षक प्रदान करते हैं। जिसके कारण जहां पहले शान्ति स्थापना अभियानों की प्राथमिकताएं, संचालन के नियम, कार्य तथा इनसे संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय केवल संयुक्त राष्ट्र के द्वारा ही लिए जाते थे, वही आज अफ्रीका में शान्ति स्थापना अभियान में अनेक स्थानीय संगठनों का योगदान होने के कारण शान्ति स्थापना अभियानों से संबंधित निर्णय विभिन्न योगदान देने वाले संगठनों के द्वारा लिए जाते हैं, जिससे इनमें परस्पर मतभेद नजर आते हैं तथा शान्ति रक्षकों को शांति स्थापना के कार्य करने में अवरोध का सामना करना पड़ता है।

- **Powles, et.al, (2015),** ने एक पुस्तक में प्रकाशित अपने लेख **"United Nations Peacekeeping Challenges: The Importance of the Integrated Approach"** में संयुक्त राष्ट्र के शांति रक्षकों के सम्मुख आने वाली समस्याओं का वर्णन करते हुए बताया है कि समकालीन समय में संघर्षरत क्षेत्र हिंसा से ग्रस्त हैं, जिसके कारण न केवल वहां के स्थानीय नागरिक बल्कि शांति रक्षक भी इस संघर्ष का निशाना बनते हैं और उन्हें अपनी जान गवानी पड़ती है। इसके अतिरिक्त जहां एक तरफ इस बात की प्रशंसा होती

हैं कि विभिन्न देशों के शांति रक्षक अपने भिन्न–भिन्न अनुभवों एवं योग्यताओं के द्वारा शांति स्थापित करने में योगदान देते हैं, वहीं विभिन्नता होने के कारण उत्पन्न मतभेद से इनके विपरीत प्रभाव भी पड़ते हैं।

➢ **Taylor & Keeley, (2016),** अपने लेख **"Protecting Civilians in the Context of United Nations Peacekeeping Operations Successes, Setbacks, Remaining Challenges"** में लेखकों ने नागरिकों के बचाव हेतु संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियानों को यू.एन. ऑफिस फॉर कोर्डिनेशन ऑफ हयुमेनिटेरियन अफेर्यस (OCHA) तथा संयुक्त राष्ट्र शान्ति स्थापना अभियान विभाग द्वारा दिये जाने वाले आदेशों एवं निर्देशों की उत्पत्ति, व्याख्या और क्रियान्वयन का अध्ययन किया है और पाया है कि संयुक्त राष्ट्र के शान्ति रक्षकों द्वारा नागरिकों की रक्षा करना संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के राजनीतिक समर्थन तथा झगड़े में शामिल मुख्य पक्षों की सहायता से ही सम्भव है तथा वर्तमान में शान्ति स्थापना अभियानों के द्वारा सहन की जाने वाली चुनौतियों के निदान हेतु इस बात का अध्ययन किया जाना अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसा क्या किया जाए जिससे शान्ति रक्षकों को आदेशों एवं निर्देशों की अस्पष्टता का सामना न करना पड़े।

➢ **Baaz & Varweyen (2017),** ने अपने लेख **"Fighting Behind the Frontlines: Armies wives in the eastern DRC"** में बताया हैं कि लोकतान्त्रिक गणराज्य कोंगों में तैनात सैन्य बलों की पत्नियां एवं बच्चे भी इन सैन्य बलों का एक अभिन्न अंग होते हैं। यह भी सैनिकों के साथ उस क्षेत्र में रहते हैं जहाँ पर कि सैनिकों की तैनाती की जाती हैं, भले ही वह क्षेत्र कितना ही असुरक्षित क्यों न हो। डी0 आर0 सी0 के इन सैनिकों को शांति अभियानों के दौरान सीविलियन्स् (नागरिकों) की संज्ञा दी जाती है, जिसके कारण इन्हें एवं इनके परिवारजनों को सुविधाओं के अभाव एवं अनियमित वेतन का सामना करके एक संघर्षपूर्ण जीवन जीना पड़ता है।

➢ **Leijenaar & Carvalno (2017),** ने अपने लेख **"Can Funding Uncertainty Improve Peacekeeping in Africa"** में यह बताया हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वारा अफ्रीकन यूनियन तथा संयुक्त राष्ट्र को शान्ति स्थापना अभियान संचालित करने हेतु जो आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है,

उसमें संयुक्त राज्य द्वारा 40 प्रतिशत की कटौती की जाने की बात कही जा रही है। जिससे कि अफ्रीका में संचालित शांति स्थापना अभियानों पर धन की कमी के कारण नकारात्मक प्रभाव पड़ने की स्थिति उत्पन्न हो रही है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव अफ्रीका में शांति एवं सुरक्षा की स्थापना करने पर पड़ रहा है, क्योंकि यह वह समय है जब अफ्रीकन यूनियन तथा संयुक्त राष्ट्र को उपयुक्त रणनीतिक एवं सामरिक मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु धन की सर्वाधिक आवश्यकता है।

शोध अन्तराल

1. अब तक जो अध्ययन किए गए हैं वह सम्पूर्ण अफ्रीकन महाद्वीप में संघर्षो के कारणों एवं प्रभावों का तो अध्ययन करते हैं, परन्तु ऐसे अध्ययनों का अभाव है जो विशिष्ट रुप से उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में संघर्षो के कारणों एवं प्रभावों पर केन्द्रित हों।
2. अब तक जो अध्ययन किए गए हैं वह सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने में संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों की भूमिका का तो अध्ययन करते हैं, परन्तु ऐसे अध्ययनों का अभाव है जो कि उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों की भूमिका का विस्तृत एवं विशिष्ट अध्ययन करें।
3. यह अध्ययन तो किया गया है कि संयुक्त राष्ट्र के सहयोगी देश सम्पूर्ण शांति स्थापना अभियानों में कितना योगदान दे रहें हैं, परन्तु ऐसे अध्ययनों का अभाव हैं जो कि विस्तृत एवं विशिष्ट रूप में यह बताए कि संयुक्त राष्ट्र के सहयोगी देशों के द्वारा उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशो में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों में किस प्रकार का योगदान दिया जा रहा हैं?
4. अब तक यह अध्ययन किए गए हैं कि सम्पूर्ण शांति स्थापना अभियानों के कार्यकर्त्ताओं को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, परन्तु इनमें ऐसे अध्ययनों का अभाव है जो कि गहन रूप से यह बताए कि उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशो में तैनात संयुक्त राष्ट्र के शांति रक्षकों को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है?

समस्या का कथन

उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देश– सूडान, दक्षिण सूडान, कांगो लोकतान्त्रिक गणराज्य तथा मध्य अफ्रीकन गणराज्य– अफ्रीकी महाद्वीप के सबसे अधिक संघर्षरत देश हैं। परिणामस्वरूप अफ्रीकी महाद्वीप विश्व के सात महाद्वीपों में से सबसे ज्यादा संघर्षों, युद्धों एवं गृह युद्धों से ग्रस्त महाद्वीप है। यह एक लम्बे समय (1870–1993) तक ब्रिटिश राज्य का उपनिवेश रहा है, जिसे 20वीं शताब्दी के अन्त (1993) में स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। राजनीतिक अस्थिरता, जातिगत संघर्ष, शैक्षणिक पिछड़ापन, औद्योगिक एवं तकनीकी विकास का अभाव, खनिज संसाधनो का असमान वितरण आदि उत्तर एवं मध्य अफ्रीकन देशों में होने वाले संघर्षो का मुख्य कारण हैं। इन युद्धों एवं संघर्षों से उपरोक्त क्षेत्रों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, सैन्य, व्यवस्था एवं औद्योगिक विकास पर विपरीत प्रभाव पड़े हैं।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा उत्तर एवं मध्य अफ्रीका के उपरोक्त अशांत देशों में शांति एवं सुरक्षा की स्थापना करने हेतु वर्तमान में 05 शांति स्थापना अभियान चलाए जा रहे हैं। जिनमें संयुक्त राष्ट्र के सहयोगी देश भिन्न – भिन्न प्रकार से अपना योगदान दे रहे हैं तथा शांति की स्थापना हेतु तैनात शांति रक्षकों को इन संघर्षरत क्षेत्रों में अनेक प्रकार की समस्याओं एवं बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी कार्य कुशलता प्रभावित होती है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा चलाए जा रहे शांति स्थापना अभियानों के इस क्षेत्र पर क्या प्रभाव पड़ रहा हैं? संयुक्त राष्ट्र के सहयोगी देशों द्वारा इन अभियानों में किस प्रकार से क्या योगदान दिए जा रहें हैं? शांति रक्षकों द्वारा अपने कार्यक्षेत्र में किन–किन समस्याओं का सामना किया जाता हैं? आदि प्रश्नों का हल खोजने के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन ''संयुक्त राष्ट्र के 'शांति स्थापना अभियानों' की भूमिका : उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों के विशेष सन्दर्भ में (वर्ष 2007 से 2017)'' का चयन किया गया है।

उददेश्य

1. संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि की व्याख्या करना।
2. उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों में संघर्षों के कारणों एवं संघर्षों के प्रभावों का अध्ययन करना।

3. उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों में शान्ति स्थापना करने में संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों की भूमिका का अध्ययन करना।
4. उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों में चल रहे संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों में सहभागी–सहयोगी देशों के योगदान का अध्ययन करना।
5. उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों के शान्ति रक्षकों की समस्याओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियान संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित करने के मुख्य साधन हैं, जो अपनी स्थापना के समय से ही पूरे विश्व में शान्ति एवं सुरक्षा की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।
2. उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में संघर्षों के कोई कारण नहीं हैं तथा संघर्षों के उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में कोई प्रभाव नहीं पड़ रहें हैं।
3. संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों के द्वारा उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में शान्ति और सुरक्षा की स्थापना करने में किसी प्रकार की भूमिका निर्वाह नहीं किया जा रहा।
4. उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में संयुक्त राष्ट्र द्वारा चलाए जा रहे शान्ति स्थापना अभियानों में सहभागी–सहयोगी देश कोई योगदान नहीं दे रहे हैं।
5. उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों में संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों के शान्ति रक्षकों को अभियानों के दौरान किसी प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ रहा है।

प्रमुख शब्दों की परिभाषा

1. **संयुक्त राष्ट्र** :– संयुक्त राष्ट्र एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन हैं, जिसका प्रमुख उदे्श्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखना है। इसकी स्थापना 24 अक्टूबर 1950 को हुई थी।

2. **शान्ति स्थापना अभियान** :– शान्ति स्थापना अभियान संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित ऐसे अभियान हैं जिनमें सैन्य बल तो शामिल होते हैं, परन्तु वह अन्र्तराष्ट्रीय संघर्षपूर्ण क्षेत्र में शांति और सुरक्षा को स्थापित करने के लिए बल का उपयोग नहीं करते।

3. **शान्ति रक्षक** :– शांति स्थापना अभियानों के सैन्य बल में शामिल सैनिकों को शांति रक्षक कहा जाता हैं। इनका कार्य संयुक्त राष्ट्र के आदेशों का पालन करते हुए संघर्ष युक्त स्थानों पर शांति पूर्ण साधनों का उपयोग करके शांति स्थापित करने का होता है।

4. **शान्ति** :–शांति वह स्थिति है जब लोगों के मध्य परस्पर तालमेल हो तथा वह अपने झगड़ों का निवारण बिना हिंसा के आपसी वार्ता द्वारा करने में सक्षम हो और अपने जीवन स्तर को सुधारने के लिए संयुक्त रूप से कार्य करें।

5. **संघर्ष** :– संघर्ष का तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्यिों, समूहों या देशों के बीच मतभेद, प्रतिरोध अथवा विरोध आदि से है।

6. **अफ्रीकी महाद्वीप** :– अफ्रीकी महाद्वीप एशिया के बाद विश्व के सात महाद्वीपों में सबसे बड़ा महाद्वीप है। अफ्रीका के उत्तर में भू–मध्य सागर एवं यूरोप महाद्वीप, पश्चिम में अटलांटिक महासागर, दक्षिण में दक्षिण महासागर तथा पूर्व में हिन्द महासागर हैं।

7. **उत्तरी अफ्रीकी देश** :– उत्तरी अफ्रीकी देश अफ्रीका के उत्तरी भाग में स्थित हैं। इनमें अफ्रीका के अलजीरिया, मिस्त्र, लीबिया, मोरक्को, सूडान, दक्षिण सूडान (जिसकी उत्त्पति सन् 2011 में सूडान का विभाजन होने से विश्व के 193 वें देश के रूप में हुई), टयूनीशिया, एवं पश्चिमी सहारा नामक देश आते हैं।

8. **मध्य अफ्रीकी देश** :– मध्य अफ्रीकी देश अफ्रीका के मध्य भाग में स्थित हैं। इनमें अफ्रीका के अंगोला, कैमेरून, मध्य अफ्रीकन गणराज्य, चाड, कांगो, कांगो लोकतान्त्रिक गणराज्य, इक्वेटोरियल गिनी, गैबोल, साओ होमे एवं पिंसिपे, नामक देश आते हैं।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत शोध निम्न अनेकों आधारों पर महत्वपूर्ण है; क्योंकि–

- प्रस्तुत शोध उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों पर केन्द्रित होगा, जिसमें इन क्षेत्रों का गहन, विस्तृत एवं विशिष्ट अध्ययन किया जाएगा तथा यह शोध उत्तर एवं मध्य अफ्रीकी देशों में युद्धों, गृह युद्धों एवं संघर्षों के कारण एवं प्रभाव जानने में सहायता करेगा, जिससे कि वहां के लोगों को युद्धों से होने वाले हानिकारक दुष्प्रभावों का पता चलेगा।
- प्रस्तुत शोध से यह ज्ञात होगा कि उत्तर एवं मध्य अफ्रीकी देशों में संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों का प्रारम्भ एवं विकास कब एवं कैसे हुआ? इसमे समय–समय पर क्या परिवर्तन आए? संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों का इस क्षेत्र में शांति व्यवस्था स्थापित करने के प्रयासों से क्या प्रभाव पड़ रहा है? शांति रक्षकों को इस क्षेत्र में किन–किन समस्याओं एवं बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है? तथा संयुक्त राष्ट्र के सहयोगी देशों द्वारा किस प्रकार इस क्षेत्र में संचालित शांति स्थापना अभियानों में अपना योगदान दिया जा रहा है ?
- इस शोध के माध्यम से उपरोक्त बिन्दुओं की जानकारी प्राप्त होगी जिससे अनुसंधानकर्त्ताओं को पठन–पाठन एवं अग्रिम अनुसंधान में तथा शिक्षाविदों एवं राजनीतिक वैज्ञानिकों को नए सिद्धान्तों का निमार्ण करने अथवा पुराने सिद्धांतों में संशोधन करने में सहायता प्राप्त होगी।
- इस शोध के माध्यम से उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों में शांति एवं सुरक्षा की स्थापना करने के आवश्यक उपायों को खोजने का प्रयास किया जाएगा जिससे नीति निर्माताओं को उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों में शांति स्थापित करने हेतु नीतियॉ बनाने में सहायता मिलेगी, जिससे इस क्षेत्र के साथ–साथ सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित होगी ।
- इस शोध के द्वारा संयुक्त राष्ट्र एवं नीति निर्माताओं को यह भी जानने में सहायता मिलेगी कि उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशों में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों में समकालीन

समय के अनुसार क्या—क्या परिवर्तन किए जाने चाहिए? जिससे संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों की कार्यकुशलता में वृद्धि हो सके।

शोध विधि

शोध प्रचना : प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध प्रचना का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन का क्षेत्र : प्रस्तुत अध्ययन अफ्रीकी महाद्वीप के उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकन देशों पर केन्द्रित होगा।

तथ्यों का संकलन : तथ्यों के संकलन के लिए प्राथमिक तथा द्वैतीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया जाएगा।

1. प्राथमिक स्त्रोतों के अन्तर्गत उत्तरी एवं मध्य अफ्रीकी देशो में संचालित संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों के मुख्यालयों से इ—मेल तथा टेलीफोन के द्वारा तथा सेवानिवृत कार्यकर्ताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर तथ्यों का संकलन किया जाएगा।
2. द्वैतीयक स्त्रोतों में पुस्तकें, शोध ग्रन्थ, लेख, शोध पत्रिकाएं मैगजीन तथा इंटरनेट वेबसाइट का प्रयोग किया जाएगा।

निर्दशन : प्रस्तुत अध्ययन में सुविधाजनक निर्दशन विधि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन की इकाई : प्राथमिक तथ्यों का संकलन संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना अभियानों के मुख्यालयों में नियुक्त अधिकारियों एवं सेवानिवृत कार्यकर्ताओं से किया जाएगा।

तथ्य संकलन की प्रविधि :— प्रस्तुत अध्ययन में प्रश्नावली विधि तथा मौखिक साक्षात्कार का उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय — संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

द्वितीय अध्याय — उत्तर एवं मध्य अफ्रीकी देशों में संघर्षो के कारण एवं उनके प्रभाव

तृतीय अध्याय — शान्ति स्थापित करने में संयुक्त राष्ट्र के शान्ति स्थापना अभियानों की भूमिका

चतुर्थ अध्याय – संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित शान्ति स्थापना अभियानों में सहभागी–सहयोगी देशों की भूमिका

पंचम अध्याय – संयुक्त राष्ट्र के शान्ति रक्षकों के सम्मुख आने वाली समस्याएं

षष्ठम् अध्याय – निष्कर्ष एवं सुझाव

सन्दर्भ सूची

पुस्तकें एवं शोध पत्र–पत्रिकाएँ –

- Adebajo, Adekeye, (2016), "UN Peacekeeping in Africa : From the Suez Crisis to the Sudan conflicts" , Lynne Rienner Publishers, London
- Ajayi , Titilope, (2008), "The UN, The AU & ECOWAS – A Triangle for Peace & Security in West Africa", Friedrich-Ebert-Stiftung publication, Berlin, Germany
- Aremu , Olaosebikan, et.al, (2010), "Conflict in Africa : Meaning, Causes, Impact & Solutions", An International Multi-Disciplinary Journal, Ethiopia , Vol. 4, No. 17, Pp. 549-560
- Baaz, Maria Eriksson and Verweijen, Judith, (2017) "Fighting behind the frontlines: army wives in the eastern DRC", Available on - https://issafrica.org/research/central-africa-report/fighting-behind-the-frontlines-army-wives-in-the-eastern-drc
- Bellamy, Alex J. & William, Paul D. (2014), "Trends in Peace Operations : 1947 - 2017", Koops, Joachim, et.al, "The Oxford Handbook of United Nations Peacekeeping Operations" (etd.) , Oxford University Press, United Kingdom
- Banerjee, Dipankar & Thakur Ramesh, (2014), " Emerging Challenges in UN Peacekeeping Operations", SAMSKRITI Publications, New Delhi
- Beri, Ruchita, (2015), "India : Providing for Peace in Africa", Available on - http://www.mea.gov.in/infocusarticle.htm?25966/India+Providing+for+Peace+in+Africa

- Brosig, Malte, (2014), "African Solution to African Problems or Meddling in your Neighbors' Conflict? Is Peacekeeping Increasing Interstate Tension?", The ITPCM International Commentary: Peacekeeping Trends And Challenges in Africa, Vol. X, no.36, Pp. 13-20
- Bujra, Abdalla, (2002), "African Conflicts : Their Causes and Their Political & Social Environment", Addis Ababa Publications, Ethopia
- Choedon, Yeshi, (2015), "Politics of the United Nations Peacekeeping Operations: Resources Mobilization and Alternative Arrangements", K. W. Publishers Pvt Ltd, New Delhi
- Dessu, Meressa K. (2017), "Can South Sudan's peace agreement be Revitalised?", Available on - https://issafrica.org/iss-today/can-south-sudans-peace-agreement-be-revitalised
- Diehl, Paul F. (2013), "Peace Operations", Polity Press, United Kingdom
- Djinnit, Dalil, (2016), "Ethiopia's Contribution to Global and African Peacekeeping Operations", Available on - https://ippjournal.wordpress.com/2016/04/07/ethiopias-contribution-to-global-and-african-peacekeeping-operations-2/
- Donnenfeld, Zachary and Akum, Fonteh , (2017), "Gathering storm clouds: political and economic uncertainty in Central Africa", Available on - https://issafrica.org/research/central-africa-report/gathering-storm-clouds-political-and-economic-uncertainty-in-central-africa
- Dorn, A. Walter, (2011), "Keeping Watch : Monitoring Technology & Innovation in UN Peace Operations", United Nations University Press, New York

- Firsing, Scott, (2014), “Thinking through the role of Africa's militaries in peacekeeping: the cases of Nigeria, Ethiopia and Rwanda”, South African Journal of International Affairs, Volume - 21, Issue - 1, Pp. 45-67
- Guttry, Andrea De, (2014), “Recent Challenges to Peacekeeping Operations in Africa”, The ITPCM International Commentary: Peacekeeping Trends and Challenges in Africa, Vol. X, no.36, Pp. 07-12
- Jawli, Nandini, (2013), “Post Cold War World Order”, Raj Publishers, Jaipur
- Karlsrud, John, (2015), “The UN at war: examining the consequences of peace-enforcement mandates for the UN peacekeeping operations in the CAR, the DRC and Mali”, Third World Quarterly, Volume 36, Issue 1, Pp. 40-54
- Kieh, George Clay (2011), “Civil Conflicts in Africa : Patterns and Trends” Kieh, G. C. & Mukenge, I. R. “Zones of conflict in Africa : Theories and Cases” (etd.), Praeger Publications, London
- Kieh, George Clay, (2011), “The Context of Civil Conflicts in Africa”, Kieh, G. C. & Mukenge, I. R. “Zones of conflict in Africa: Theories and Cases” (etd.), Praeger Publications, London
- Kimaiyo , David & Tarus, Chemwaina, (2006), “Effectiveness of United Nation’s Mission in Africa : a Comparitive Assessment if UNAMSIL, MONUC & UNAMID”, University of Nairobi Press, Nairobi, Kenya
- Koops, Joachim A. & Tardy, Thierry, (2016), “The United Nations’ Inter – Organizational Relations in Peacekeeping” Koops, Joachim, et.al, “The Oxford Handbook of United Nations Peacekeeping Operations” (etd.) , Oxford University Press, United Kingdom

- Leijenaar, Annette and Carvalho, Gustavo de, (2017) "Can funding uncertainty improve peacekeeping in Africa?", Available on - https://issafrica.org/iss-today/can-funding-uncertainty-improve-peacekeeping-in-africa
- Mandal,U.C. (2009), "United Nations & World Peace", Sarup Book Publishers, New Delhi
- Mwanasali, Musifiky, (2011), "Civil Conflicts & Conflict Management in the Great Lakes region of Africa", Kieh, G. C. & Mukenge, I. R, "Zones of conflict in Africa : Theories and Cases" (etd.), Praeger Publications, London
- Nganje, Kgalalelo, (2017), "Preventing election violence is a priority for Africa", Available on- https://issafrica.org/iss-today/preventing-election-violence-is-a-priority-for-africa
- Nizeimana, John Bosco & Nhema, Alfred G. (2015), "United Nations (UN) Sanctiones Aggressive Mandate & the Future of UN Peace Keeping Operations: The Case of Democratic Republic of Congo (DRC)", International Journal of Humanities and Social Science, Vol. 5, No. 8, Pp. 60-72
- Olonisakin, Funmi, (2011), "Reinventing Peacekeeping in Africa: Conceptual and Legal Issues", Kluwer Law International Publications, London
- Powles, et.al, (2015), "United Nations Peacekeeping Challenge: The Importance of the Integrated Approach", (edt.) Ashgate Publishing Limited, England
- Renwick, Danielle, (2015), "Peace Operations in Africa", Available on - https://www.cfr.org/backgrounder/peace-operations-africa
- Sambanis, Nicholas, (2008), "Short-Term and Long-Term Effects of United Nations Peace Operations", The World Bank Economic Review, Vol. 22, No.(1), Pp.9-32

- Sambanis, Nicholas & Ibrahim, Elbadawi, (2013), “Why there are so many Civil wars in Africa? Undersatand & Preventing Violent Conflict”, Journal of African Economies, Vol. 2, No.3, Pp. 1-31
- Sharma, Nitin, (2014), “United Nations and World Peace”, Regal Publications, New Delhi
- Shaukat, Sajjad, (2015) “Pakistan Armed Forces’ Role in UN Peacekeeping”, http://zameer36.com/pakistan-armed-forces-role-in-un-peacekeeping/
- Sloan, James, (2014), “The Evolution of the use of Force in UN Peacekeeping” Journal of Strategic Studies , Volume 37, Issue 5, Pp. 674-702
- Taylor, Glyn & Keeley, Max, (2016), “Protecting Civilians in the Context of United Nations Peacekeeping Operations Successes, Setbacks, Remaining Challenges”. Available on: https://www.stimson.org/content/protecting-civilians-context-un-peacekeeping-operations-0
- Thakur, Ramesh, et.al, (2014), “Unintended consequences of peacekeeping operation”, (2014), United Nations University Press, Tokyo, New York, Paris
- “The Indian Army in United Nations Peacekeeping Operations” , (2009), Spantech & Lancer Publishers, London
- Toure, Kathryn, (2015), “Impact of Conflict in Africa”, University for Peace Press, Switzerland
- Waldron, Arthur N. (2009), “China in Africa”, The Jamestown Foundations Publishers, Washington, USA
- Williams, Paul D. (2013), “Peace Operations in Africa: Lessons Learned Since 2000”, Africa Security Brief Journal, Vol. 2, no. 5, Pp. 01-08
- Williams, Paul D. (2016), “War and Conflict in Africa”, Polity Press, United Kingdom

- Yadav, Manish Kumar, (2014), "India's Quest for United Nations Security Council Permanent Seat with Special Reference to its Peace Keeping Credentials", Global Journal of Political Science, Volume 2, No.1, pp. 1-11.
- Yizhong, (2015), "China's Participation in United Nations Peacekeeping Operation: Policy and Prospects", Available on - https://pure.fak.dk/ws/files/5949223/UN_Peacekeeping_NET.pdf,

इंटरनेट वेबसाईट –

- www.international-alert.org/what-peace
- https://www.nobleprize.org>peace>lareats
- http://www.un.org/en/peacekeeping/operations/history.html
- http://www.un.org/en/peacekeeping/operations/present.html
- https://www.cigionline.org/sites/defalt/files/un_peacekeeping_1.pdf
- http://www.un.org/en/peacekeeping/operations/financing.html
- http://nationalinterest.org/blog/the-buzz/the-wars-ravaging-africa-2016-14993
- http://theweek.com/articles/599578/are-wars-that-rage-africa-2016
- http://africacenter.org/spotlight/evolution-african-peacekeeping/
- http://www.bbc.com/news/world-africa-38372614
- http://ontheworldmap.com/africa/
- https://www.lawteacher.net/free-law-essays/international-law/the-problems-of-peacekeeping-operations-in-africa-international-law-essay.php
- http://www.providingforpeacekeeping.org/2017/01/03/contributor-profile-south-africa/
- https://www.cfr.org/backgrounder/peace-operations-africa
- https://africacenter.org/spotlight/evolution-african-peacekeeping/
- http://www.dw.com/en/un-peacekeeping-missions-in-africa/g-38429555
- https://africacenter.org/spotlight/evolution-african-peacekeeping/

- https://www.africa.com/look-10-un-peacekeeping-missions-africa/
- https://www.chathamhouse.org/sites/files/.../field/field.../20141015AfricanUnion.pdf
- http://www.un.org/en/sections/what-we-do/maintain-international-peace-and-security/